3

व्यवस्था के अधीन आराधना, 1

(मूसा से सुलैमान तक)

जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र की दासता में से निकाला तो उसने उन्हें अपने विशेष लोग घोषित किया और उनका परमेश्वर होने की प्रतिज्ञा की (निर्गमन 6:7)। सीनै पर्वत पर उसने उनके साथ एक वाचा बान्धी और उन्हें अपनी व्यवस्था दी।

आराधना के लिए नियम

बेशक, व्यवस्था से पहले की कुछ प्रथाएं, जैसे पशुओं का बलिदान व्यवस्था में शामिल थे, परन्तु व्यवस्था के अधीन आराधना और कड़ाई से नियमित हो गई। आराधना के तौर-तरीके विस्तार से बताए गए। इस्राएल के मण्डली के रूप में इकट्ठे होने के समय गाने या प्रार्थना करने के विषय में कुछ नहीं कहा गया था, परन्तु डेरों के पर्व के दौरान हर सातवें वर्ष मण्डली में व्यवस्था पढ़ी जाती थी (व्यवस्था विवरण 31:10-13)। माता-पिता के लिए घरों में और मार्ग में चलते हुए अपने बच्चों को परमेश्वर की बातें सिखाना आवश्यक था (व्यवस्था विवरण 6:6, 7)।

नीचे आराधना का अच्छा सार मिलता है, जो मूसा के द्वारा परमेश्वर ने प्रकट किया था:

> (1) प्रार्थना, भेंटें और समारोहों जैसी बातों के बारे में सब कुछ बताया गया था। (2) आराधना मुख्यतया बलिदान के प्रबन्ध पर आधारित थी, जिसमें लहू लोगों के लिए जीवन का प्रतिनिधित्व करता प्रतीक था। (3) इब्रानी वर्ष को बहुत प्राथमिकता दी गई थी। (4) इस प्रबन्ध में याजक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी क्योंकि वह बलिदानों की भेंट को नाटकीय रूप देता था। (5) आराधना का स्थान महत्वपूर्ण था क्योंकि यह परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक था। (6) पर्वों पर, विशेषकर फसह, पिन्तेकुस्त, तुरहियों, प्रायश्चित का दिन और तम्बुओं पर विशेष ज़ोर दिया गया था।[1]

सब्त का दिन आराधना का विशेष दिन नहीं था बल्कि विश्राम का दिन था। सप्ताह के हर सातवें दिन इस्राएली लोग काम छोड़कर परमेश्वर द्वारा उन्हें मिस्र की दासता से निकाले जाने को याद करते थे (व्यवस्थाविवरण 5:12-15)।

आराधना का पात्र

मूसा को इस्राएलियों की अगुआई के लिए तैयार करते हुए परमेश्वर ने अपने स्वभाव के

प्रतापी भय के साथ उसके सामने आकर उसे अपनी महानता से प्रभावित किया। परमेश्वर ने इस्राएलियों को दासता से निकालने की तलाश में मूसा को मिस्र में भेजने से पहले उसे जलती हुई झाड़ी में दर्शन दिया। परमेश्वर उस पर YEHWEH अर्थात ''मैं हूं'' (निर्गमन 3:14) के रूप में प्रकट हुआ, जिससे परमेश्वर का नाम याहवेह निकला है यानी जो अनादि, अपने आप में सम्पूर्ण, सर्व पर्याप्त और किसी पर निर्भर नहीं है। वह दाता है, जिसे किसी से लेने की आवश्यकता नहीं है, वह सहायक है, जिसे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं, वह छुड़ाने वाला है जिसे किसी को उसे छुड़ाने की आवश्यकता नहीं, सब कुछ जानने वाला है, जिसे कुछ बताने की आवश्यकता नहीं और सर्वशक्तिमान है, जिसे और शक्ति या ऊर्जा की आवश्यकता नहीं। उसके पवित्र नाम को इस्राएल द्वारा आदर और सम्मान दिया जाना था।

परमेश्वर अपनी सृष्टि के ऊपर है और उसका स्वभाव भौतिक नहीं है, इसलिए लोगों को उसे दर्शाने वाली मूर्तियां नहीं बनानी थी न ऐसी मूर्तियों की आराधना करनी थी (निर्गमन 20:3-5; व्यवस्थाविवरण 5:7-9)। मूसा ने कहा:

> इसलिए तुम अपने विषय में बहुत सावधान रहना। क्योंकि जब यहोवा ने तुम से होरेब पर्वत पर आग के बीच में से बातें की तब तुम को कोई रूप न देख पड़ा। कहीं ऐसा न हो कि तुम बिगड़कर चाहे पुरुष चाहे स्त्री के, चाहे पृथ्वी पर चलने वाले किसी पशु, चाहे आकाश में उड़ने वाले किसी पक्षी के, चाहे भूमि पर रेंगनेवाले किसी जन्तु, चाहे पृथ्वी के जल में रहने वाली किसी मछली के रूप की कोई मूर्ति खोद कर बना लो (व्यवस्थाविवरण 4:15-18)।

आराधक द्वारा मरियम की मानवता और मानवीय शरीर में रहते समय यीशु के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली प्रतिमाएं और मूर्तियां ऊपर दी गई शिक्षा का उल्लंघन हैं। ऐसी प्रतिमाओं या मूर्तियों के सम्मान में झुकना मानवीय रूपों की आराधना करना है। इसकी सख्त मनाही है। यीशु अपनी महिमामय आत्मिक स्थिति में वापस जा चुका है (यूहन्ना 17:5; फिलिप्पियों 3:21), सो अब वह मानवीय देह में बिल्कुल नहीं है। हमें यीशु के ईश्वरीय स्वभाव की आराधना करनी है न कि उसके देह धारण करने के समय के मानवीय स्वभाव की।

व्यवस्था के अधीन केवल परमेश्वर की ही आराधना होनी थी (व्यवस्थाविवरण 6:14, 15)। उसने आराधना के हर पहलू के बारे में स्पष्ट निर्देश दे दिए थे कि वे कैसे आराधना करेंगे, उन पर कुछ भी छोड़ा नहीं गया था। उन्हें उसकी इच्छा के अनुसार, उसकी इच्छा के ढंग से और जगह पर उसकी आराधना करनी थी।

> आराधना के रूपों या माध्यम में पशुओं और अनाज के बलिदानों तथा भेंटों की विशेष किस्में थीं (लैव्यव्यवस्था 1-7 की होम, अन्न, मेल, पाप और दोष बलियां), धोने की रस्में (व्यवस्थाविवरण 21:6), प्रार्थना (निर्गमन 30:7-10) परमेश्वर के वचन का निर्देश और याद करना (लैव्यव्यवस्था 10:11; व्यवस्थाविवरण 6:4-9) और परमेश्वर को दसमांश और भेंटें देना (गिनती 18:21-24)। परमेश्वर द्वारा ठहराई इब्रानी आराधना के

औपचारिक संस्थानों में तम्बू या मिलाप का तम्बू और लेवियों की याजकाई शामिल थी (निर्गमन 29:1-9; 35:1-19)।[2]

आराधना का स्थान

व्यवस्था के अधीन आराधना का सम्बन्ध तम्बू से और बाद में मन्दिर से था, जो तम्बू से दोगुने आकार का था। इसे दो भागों में बांटा गया था। ''पवित्र स्थान'' में मेज़ की रोटी,[3] धूप की वेदी और सोने का शमादान था। ''परमपवित्र स्थान'' में वाचा का संदूक था, जहां परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति होने की प्रतिज्ञा की थी। वाचा, दस आज्ञाओं को वाचा के संदूक में रखा गया था (व्यवस्थाविवरण 10:4, 5; 1 राजाओं 8:9, 21)।

तम्बू को पहले सीनै पर लगाया गया था (निर्गमन 40:2, 17; गिनती 10:11, 12)। जंगल में घूमने के दौरान इस्राएली जहां भी जाते इसे साथ ले जाते थे। माना जाता है कि यहोशू इसे गिलगाल में ले गया जहां इस्राएलियों ने डेरे डाले (यहोशू 4:19) और फिर एबाल पर्वत के निकट किसी जगह ले गया (यहोशू 8:30-35)। न्यायियों केसमय इसे एप्रैम में शीलोह नामक जगह ले जाकर शाऊल के शासन तक वहां रहने दिया होगा। कइयों ने निष्कर्ष निकाला है कि इसे नोब में ले जाया गया, क्योंकि याजक वहां रहते थे (1 शमुएल 22:11) और फिर गिबोन नाम जगह में (1 इतिहास 16:39)।

व्यवस्था में यह स्पष्ट नहीं था कि इस्राएलियों को आराधना किस जगह करनी है बल्कि इतना ही कहा गया था कि लोग प्रभु को उस जगह ढूंढ़े जहां उसने बाद में चुनना था। ''किन्तु जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों में से चुन लेगा, कि वहां अपना नाम बनाए रखे, उसके उसी निवास स्थान के पास जाया करना'' (व्यवस्थाविवरण 12:5)। परमेश्वर ने एक विशेष जगह चुनी ताकि इस्राएली मूर्तिपूजक लोगों के साथ उनकी पूजा के स्थानों में पूजा न करें (व्यवस्थाविवरण 12:2-4)। उसने बहुत बार बताया कि वे उसी जगह आराधना करें, जिसे वह चुनेगा (व्यवस्थाविवरण 12:11-26; 14:23-25; 15:20; 16:2-16; 23:16; 26:2)।

जंगल में घूमने के चालीस वर्षों और न्यायियों के चार सौ से अधिक वर्षों के शासन के दौरान (13:20), इस्राएलियों ने अलग-अलग जगह आराधना की। अन्त में दाऊद के शासन में यरूशलेम वाचा के संदूक का विश्राम स्थल (2 शमुएल 6:16, 17) वह जगह बन गया जहां इस्राएलियों को आराधना करनी थी। सुलैमान द्वारा मन्दिर का निर्माण पूरा किए जाने के बाद सन्दूक को इसमें रख दिया गया। सुलैमान ने कहा कि यरूशलेम ही वह जगह थी, जहां परमेश्वर का नाम था (1 राजाओं 8:29, 44, 48) और यह कि इस्राएलियों ने उस मन्दिर में ही प्रार्थना और याचना करनी थी, जो यरूशलेम में था (1 राजाओं 8:33)। दूर-दराज के लोगों के लिए मन्दिर की ओर मुंह करके प्रार्थना करनी आवश्यक थी (1 राजाओं 8:38, 42, 44, 48)।

यहूदी आराधनालयों का बनना इस्राएलियों के आराधना स्थल अर्थात यरूशलेम के मन्दिर के 586 ई.पू. में नष्ट होने के बाद आरम्भ हुआ। आराधनालय वे जगह बन गए जहां लोग पवित्र शास्त्र को पढ़ने तथा उसकी व्याख्या के लिए आ सकते थे। आराधनालय में आमतौर पर लोग निम्न कारणों से इकट्ठे होते थे:

(1) वचन को पढ़ना और उसकी व्याख्या करना; (2) यहूदी धर्मसार अर्थात शीमा को याद करना (व्यवस्थाविवरण 6:4); (3) भजनों, दस आज्ञाओं, आशीष वचन और आमीन का इस्तेमाल; (4) प्रार्थनाएं; और (5) यहूदी कदूशाह या पवित्र किए जाने की प्रार्थना, जो मसीही परम्परा में *trisagion* (''पवित्र, पवित्र, पवित्र'') बन गया।[4]

सारांश

जो आराधना व्यवस्था के अधीन परमेश्वर ने बताई थी उसमें अधिकतर भेंटें और बलिदान थे, जो याजकों यानी हारून की सन्तान द्वारा चढ़ाए जाने थे। लेवी तम्बू की देखभाल करते थे। इस्राएलियों द्वारा की जाने वाली परमेश्वर की आराधना तम्बू के गिर्द और बाद में यरूशलेम के मन्दिर के गिर्द ही थी, जिसमें आराधना के लिए इकट्ठे होने का मुख्य स्थान था।

टिप्पणियां

[1]फ्रैंक्लिन एम. सेगलर *अंडरस्टैंडिंग, प्रीपेरिंग फ़ॉर, एण्ड प्रैक्टिसिंग क्रिश्चियन वरशिप,* दूसरा संस्करण, संशो. रैंडल्ल ब्रैडली (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन एण्ड होलमैन, 1996), 23. [2]एंड्रयू ई. हिल, *एंटर हिज़ कोर्ट्स विद प्रेज़!* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1993), 37. [3]NASB में निर्गनम 25:30 में ''मेज़ की रोटी'' की जगह ''मेज़ पर हजूरी की रोटी'' है। [4]डब्ल्यू. ओ. ई. ऑस्टरले, ''प्री-क्रिश्चियन एलिमेंट्स,'' *द ज्यूइश बैकराउंड ऑफ़ द क्रिश्चियन लिटरजी* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरनडन प्रैस, 1925), 36-82, सेगलर, 23 में उद्धृत।